इन्द्रिय एवं इन्द्रियातीत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। इस संस्कृति में भोगवाद को महत्व नहीं दिया गया है। भोगवाद का तात्पर्य है– इन्द्रिय सुख तक सीमित रह जाना। हमारी संस्कृति में इन्द्रिय जगत से परे परमार्थ जगत की चेतना को जागृत करके आत्मतत्व को जानने का उपदेश दिया गया है। प्रायः रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा सभी मनुष्यों के लिए आवश्यक है। भोगवादी संस्कृति इन्द्रिय सुख से सम्बन्धित है। भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक सुख से सम्बन्धित है। भोगवाद इन्द्रिय सुख को महत्व देता है। इस स्तर पर मानव और पशु में कोई अन्तर नहीं है। पशु भी इन्द्रिय सुख का अनुभव करता है। पाश्चात्य संस्कृति भोगवादी संस्कृति है। वहां पर खाओ पिओ और मस्त रहो को महत्व दिया जाता है। हमारी भारतीय संस्कृति में खाना–पीना, मस्त रहना कोई महत्व नहीं रखता। भारतीय दृष्टि से इसका उतना महत्व नहीं है, जितना अध्यात्मवाद का है। भारतीय जीवन दृष्टि संयम की दृष्टि है। यहां सादा जीवन और उच्च विचार को महत्व दिया जाता है।

मनुष्य प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इस संसार में एक इन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीव पाये जाते हैं। चेतना का अन्तर सभी प्राणियों में स्पष्ट दिखलायी देता है। इन सभी प्राणियों में मनुष्य सबसे अधिक विकसित है। उसमें बुद्धितत्व है। बुद्धितत्व के कारण चिंतनशीलता, विवेकशीलता का गुण उसमें है। ज्ञान केवल मनुष्य में है, अन्य प्राणियों में नहीं। धार्मिक क्रियाकलाप, सामाजिक क्रियाकलाप इत्यादि भावना केवल मनुष्य में दिखलायी पड़ती है।

संसार में दो प्रकार के जीव हैं–त्रस और स्थावर। जो जीव सुख प्राप्ति के लिये तथा दुःख से निवृत्ति के लिये यत्र–तत्र गमनागमन करते हैं, वे त्रस हैं। जिन जीवों में दुःखनिवृत्ति पूर्वक सुख प्राप्ति के लिये गमनागमन की क्षमता नहीं होती वे 'स्थावर' कहे जाते हैं। जीवों के छः प्रकार है– पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और

त्रसकायिक। स्थावर नामकर्म के उदय से उत्पन्न हुई विशेषता के कारण पृथ्वी कायिक आदि पांचों स्थावर कहलाते हैं। पृथ्वी ही जिन जीवों का शरीर है वे जीव पृथ्वीकायिक जीव कहलाते हैं। पृथ्वी कायिक जीव जन्मना इन्द्रिय विकल, अन्ध, वधिर, मूक, पंगु और अवयवहीन मनुष्य की भांति अव्यक्त चेतनावाले होते हैं। जैसी आत्मा पृथ्वीकायिक जीवों की है, वैसे ही मनुष्य की भी है। आत्मा के स्वरूप में कोई भेद नहीं है, भेद है केवल ज्ञानावरणादि कर्मों का।

जल ही जिन जीवों का शरीर है, वे जलकायिक जीव कहे जाते हैं। जल के आश्रित अनेक जीव होते हैं वे जलकायिक जीव नहीं हैं, किन्तु वे जल में उत्पन्न होने वाले त्रसकायिक जीव हैं। जल–कायिक जीवों में केवल स्पर्शेन्द्रिय होती है। अग्नि ही जिन जीवों का शरीर है, वे अग्निकायिक जीव हैं। सभी प्रकार के अग्नि, अंगारे, ज्वाला आदि अग्निकायिक जीवों के शरीर हैं। वायु ही जिन जीवों का काय है, उन्हें वायुकायिक जीव कहते हैं। वायुकायिक जीव अतिसूक्ष्म होने के कारण दृष्टिगोचर नहीं होते। संसार में जितने भी प्रकार की वायु है, वह इसी काय के अन्तर्गत है। वायुकायिक जीव जन्मना इन्द्रिय विकल मनुष्य की तरह अव्यक्त चेतना वाले होते हैं। पृथ्वी आदि में वनस्पति की तरह चैतन्य स्पष्ट नहीं होता। वनस्पतिकायिक जीवों की चेतना अधिक स्पष्ट होती है।

त्रस कायिक जीव चार प्रकार के हैं– द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय। इस प्रकार त्रस कायिक जीवों में दो इन्द्रिय से लेकर पांच इन्द्रिय वाले जीवों की गणना होती है। दो इन्द्रियवाले जीव के स्पर्शन और रसना ये दो इन्द्रियां होती हैं। तीन इन्द्रिय वाले जीव के अन्तर्गत चीटीं आदि जीव हैं। चार इन्द्रियवाले जीव के अन्तर्गत भौंरा आदि जीव आते हैं। नरकगति, मनुष्यगति और देवगति में ही पंचेन्द्रिय जीव पाये जाते हैं। संसारी जीव कर्म करते हैं और कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करते हैं।

व्यावहारिक जगत इन्द्रिय जगत है। इस जगत का ज्ञान प्राणी अपनी–अपनी इन्द्रियों से करता है। इस जगत से परे पारमार्थिक जगत है। पारमार्थिक जगत का ज्ञान इन्द्रियों द्वारा नहीं होता। यह प्रज्ञा का जगत है। प्रज्ञा के जागृत होने पर आत्मज्ञान होता है। आत्मा इन्द्रियों से परे हैं। इसलिए आत्मा को इन्द्रियों से नहीं जाना जाता। शरीर मुक्त होने के कारण यह आत्मा अमूर्त्त होती है।

आत्मा इन्द्रियातीत है। इन्द्रियों के द्वारा आत्मा को नहीं देखा जा सकता। इन्द्रियातीत विषय इन्द्रियों से परे होते हैं। आत्मा, परमात्मा, ईश्वर का ज्ञान परोक्ष रूप से होता है। ये सब विषय इन्द्रियातीत और शब्दातीत होते हैं। शब्दों के द्वारा उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है, तर्कों के द्वारा उसे जाना नहीं जा सकता, बुद्धि के द्वारा उसे ग्रहण नहीं किया जा सकता। वह शरीरवान् भी नहीं है, वह जन्मधर्मा भी नहीं है। उसके लिये कोई उपमा नहीं है। वह अमूर्त्त अस्तित्त्व है। वह अपद है– उसका बोध कराने वाला कोई पद नहीं है। वह न शब्द है, न रूप है, न गंध है, न रस है, और न स्पर्श है। वह सर्वतः चैतन्यमय है। इन्द्रियों का विषयभूत जगत् तीन आयामों–ऊंचा, नीचा और तिरछा है। आत्मा सभी आयामों से अतीत है। इसलिये आत्मा इन्द्रियातीत है।